द्वितीय अध्याय

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का परिचयात्मक अध्ययन

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

द्वितीय अध्याय

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का परिचयात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता के बाद प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन का दौर शुरु हुआ । साहित्य भी इससे अछुता नहीं रह सका । हिंदी साहित्य में परिवर्तन शुरु हो गया । स्वतत्रंता प्राप्ति के बाद हिंदी रंगमंच का विकास अधिक मात्रा में हो गया । इसमें अनेक नाटककारों ने अपना योगदान दिया ।इसमें सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का योगदान सराहनीय है । सक्सेना जी ने हिंदी नाटक का चेहरा ही बदल दिया है। हिंदी का परंपरागत नाटक सामान्य लोगों के लिए नहीं हैं , उसमें जन-चेतना को उभारने वाली भाषा और नाट्यरुप का मुक्त सौंदर्य नहीं हैं , खुले रंगमंच का , गाँव , कस्बों मजदूर बस्तियों के लिए नाटक नहीं है ।इसलिए हिंदी नाटक को प्रेक्षक जन-समुह नहीं मिला । ऐसे कठिन समय में सर्वेश्वर ने अपने नाटकों की रचना की । सर्वेश्वर ने हिंदी नाटक को नया मुहावरा , नया नाटकीय प्रयोग और जन-जीवन की सहजता दी । सर्वेश्वर ने केवल नाटक को संगीत , नृत्य की विभिन्न लयों और धूनों से जोड़ा, बल्कि पारंपरिक संगीत, नृत्य और अभिनय के संतुलित कल्पनाशील प्रयोग से विशाल दर्शक-समुह को प्रभावित किया । जिससे हिंदी नाटकों का रचनात्मक दौर शुरु हो गया । सर्वेश्वर को प्रयोगधर्मी नाटककार भी कहा जाता है , क्योंकि नाट्य क्षेत्र में नये-नये प्रयोग कर उन्होंने अपनी नाट्य प्रतिभा का परिचय दिया है । सक्सेना के नाटक अपने रुपबंध में नए सार्थक और समसामायिक परिस्थितियों को उजागर करने वाले हैं ।उन्होंने राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक बुराइयों पर कड़ा प्रहार किया ।

अतः सर्वेश्वर के नाटकों का सर्वांगीन परिचय कर लेने के लिए उनके 'बकरी' , 'लडाई' , 'अब गरीबी हटाओ' इन नाटकों का कथानक , चरित्र-चित्रण , कथोपकथन , भाषा शैली , वातावरण , उद्देश्य आदि शिल्पगत प्रवृत्तियों के आधार पर अध्ययन करना समिचीन होगा।

१.बकरी

'बकरी' नाटक में गांधी जी के सिद्धांतों का दुरुपयोग बतलाया है। किस प्रकार आज भी गांधी जी की बकरी का गाँव में इस्तेमाल किया जाता है। ग्रामीण जनता को गांधी के सिद्धांतों के जामे दिखाकर नेतागण वोट प्राप्त करते हैं और फिर कुर्सी हासिल करते हैं। गांधी के नाम पर आज भी आम जनता की लुट हो रही है। 'बकरी' के माध्यम से सर्वेश्वर ने आम आदमी की शोषण-कथा को बड़े साहस के साथ प्रस्तुत किया है। 'बकरी' गरीब जनता का प्रतीक है।

'बकरी' की कथावस्तु दो अंको में विभाजित है। प्रत्येक अंक में तीन-तीन दृश्य हैं। हर दृश्य के अंत में नट-नटी के गायन की योजना की गई है। गायन के माध्यम से वर्तमान परिस्थिति का विश्लेषण किया है। गाँव-वासियों की दयनीय स्थिति , उनकी कमजोरी का राजनेता किस प्रकार दुरुपयोग करते हैं।।यहीं नाटक की कथावस्तु है।

विशेष बात है कि इस कथावस्तु को प्रस्तुत करने के लिए सर्वेश्वर ने कथानक , घटनाओं , पात्रों , शिल्प का कोई ताना-बाना नहीं बुना है। तीन डाकू एक सिपाही और उनके द्वारा गाँव की एक गरीब औरत की बकरी हड़प लेने का प्रसंग है। उसी के चढ़ाव-उतार द्वारा सारी विडम्बना प्रस्तुत की है। उनके संवाद , उनकी मुद्राएँ , उनके गीत अभिनय और स्थितियाँ स्वतः क्रूर सत्य को कहती चलती है।

एक तरफ डाकू अर्थात व्यवस्था की योजनाएँ और उनके बीच गरीब औरत की बेबस पुकार ; दूसरी तरफ चौपाल का दृश्य और ग्रामीणों की चिंता व्यथा नाटकीय व्यंग्य और करुणा को समेटते , कहते , व्यंजित करते हुए नाटककार आगे बढ़ते हैं।

नाटक में 'बकरी संस्थान' , 'बकरी स्मारक निधी' , 'बकरी सेवा संघ' , 'बकरी शांति प्रतिष्ठान' जैसी अनेक संस्थाओं का उल्लेख हैं। इन संस्थाओं के नाम से हमारे सारे व्यवस्था-तंत्र, सरकारी संस्थाओं के आम आदमी के साथ हो रहे व्यभिचार को लेखक ने खोल के रखा है। राजनीति के क्षेत्र में चुनाव संबंधी दृष्टि , योजनाएँ , छलावा , हथकंड़े पाठक के सामने

लाकर छोड़े हैं। डाकुओं का ही आगे चलकर नेताओं में बदल जाना स्वतः सहज सशक्त व्यंग्य है। लेखक नेताओं के लम्बे-लम्बे भाषण , झुठे दावों , शब्दों की फ़िजुल खर्ची , भाषण प्रियता , खास प्रकार की शब्दावली और टोन भी पाठक के सामने प्रस्तुत किये हैं। लेखन ने हमारे राजनीतिक नेताओं के व्यक्तित्व और उनके चरित्र का और उसके कारण उत्पन्न हुई विसंगति को उभारा है। जनचेतना को जागृत करने की लेखक की कोशिश यहाँ दिखाई पड़ती है।

सर्वेश्वर की आस्था और विश्वास युवाशक्ति , युवा आक्रोश में साफ दिखता है। यद्यपि नाटक में सबसे अधिक प्रभावशाली प्रतिमा युवक की है। युवक आम आदमी को उत्तेजित करके अंत में सहसा नारे लगाता हुआ प्रविष्ट होता है। वह युवक नाटक को समाधान के संकेत स्थल पर पहुँचाता है।

नाटक का प्रथम अंक अपने आप में काफी चुस्त और गतिशील है। इसमें प्रभावक्षमता लक्षित होती है। दूसरा अंक कुछ पुनरावृत्ति और कुछ कल्पनाशीलता को लिए हुए है।

विवेच्य नाटक देश के कई भागों में सफलतापूर्वक खेला जा चुका है। इसकी प्रस्तुतियाँ देखकर वर्तमान राजनीतिक विडंबनाओं पर लोग सोचने पर बाध्य हुए हैं। यही इस नाटक की सफलता है।

चरित्र की दृष्टि से 'बकरी' नाटक में नेता , मंत्री एवं पुलिस आदि सत्ताधारी सुविधाभोगी पात्रों का चरित्र प्रस्तुत किया गया है। दुर्जन सिंह , कर्मवीर , सत्यवीर और विपती आदि पात्र व्यवस्था का विकृत रुप और सत्ता का स्वरुप उभारने वाले पात्र हैं। ये सभी पात्र वर्गीय हैं। इन पात्रों में सिपाही सत्ता का प्रतीक है। दुर्जन सिंह सुविधाभोगी राजनीतिज्ञों का प्रतीक है , जो गांधीवादी सिद्धांतों की तोड़-मरोड़ करता है। कर्मवीर और सत्यवीर गांधी जी द्वारा प्रतिपादित कर्म , सत्य आदि के आदर्शों के प्रतीक हैं। इन पात्रों के विरोध में ज़िन पीड़ित एवं शोषित पात्रों को चित्रित किया गया है। 'युवक' इस जनवादी चेतना का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। इस नाटक में बकरी परोक्ष रहकर समग्र चारित्र्य अर्जित कर लेती है। बकरी केवल प्रतीकार्थ ग्रहण नहीं करती , उसका विशेष स्वरुप और शील भी है। यह बकरी

दूध देनेवाली , घास चरने वाली बकरी नहीं है । यह तो कुर्सी , धन और प्रतिष्ठा देने वाली बकरी है ।

'बकरी' नाटक के पहले अंक में सिपाही और तीन व्यक्तियों का कथोकपथन हैं , जिसमें गांधी जी की बकरी मिलने की बात की गयी है । यह बकरी उनके मत से कुर्सी , धन और प्रतिष्ठा देनेवाली है । तभी तो तीन व्यक्ति समुह रुप में गाते हैं -

"कुर्सी भी मिल गई
सेवा भी मिल गई
माधव भी मिल गए
मेवा भी मिल गई
मिल गई मिल गई
मिल गई रे मिल गई
मुझे मिल गई मिल गई
मिल गई रे ।"[१]

दूसरे दृश्य में युवक तथा ग्रामीणों के बीच संवाद हैं । दूसरे अंक में ही युवक और सिपाही दोनों के संवाद हैं । दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में नेताओं की जीत तथा ग्रामीणों की हार को दर्शाया है । युवक ग्रामीणों को उपदेश करता है ।

'बकरी' नाटक में नट जनता की मानसिकता , वर्तमान मानसिकता का अपने गीतों के माध्यम से प्रकट करता है । बकरी नाटक की शुरुवात ही नटी द्वारा मंगलाचरण से होती है । परंतु नट उसे राजनीतिक संदर्भ जोड़कर सारी स्थिति को स्पष्ट करता है-

"पाँच देव सम दल लगी ढ़ोंग की रेस
जिनके कारण हो गया- देश आज परदेश"[२]

बकरी सामान्य लोगों का नाटक है । जो जन-सामान्य की भाषा में लिखा गया है । सर्वेश्वर कवि होने के कारण नाटक में उनके काव्य सौंदर्य ने चार चाँद लगा दिये हैं । लोक

भाषा का प्रयोग सर्वेश्वर की विशेषता है । 'बकरी' नाटक में लोकभाषा का प्रयोग सुंदर ढंग से किया है । जैसे " काव सोचे , सरकार , हमरे ऊपर तो दोऊ तरफ से मार है दुई बड़कवन के बीच हम कहॉ जाए काव करें ।"[3] बकरी नाटक में युवक के मुख से सहज भाषा का उन्मेश हुआ है । 'बकरी' नाटक में सर्वेश्वर ने गांधी जी के सिद्धांतों का दुरुपयोग दिखलाया है । आज की पूरी राजनैतिक, सामाजिक व्यवस्था पर चोट करना लेखक का मुख्य उद्देश्य रहा है ।

निष्कर्ष

बकरी नाटक की कथावस्तु दो अंकों में संपन्न की गई है । प्रत्येक अंक में तीन-तीन दृश्य हैं । नाटक में कुल पंद्रह पात्र है । युवक नाटक का नायक है । खल पात्रों की अधिकता है। दुर्जन सिंह , कर्मवीर , सत्यवीर और सिपाही आदि ऐसे पात्र हैं ।

'बकरी नाटक' का कथोपकथन सशक्त और प्रभावक्षम है । यह नाटक भाषा की दृष्टि से एक अच्छी कृति साबित होती है । राजनीतिक वातावरण में नाटक पला बढा है । बकरी नाटक का उद्देश्य पूर्ण रुप से सफल हुआ है ।

२.लडाई

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का दूसरा नाटक 'लडाई' पहले कहानी के रुप में लिखा गया था। जिसकी हिंदी जगत में बहुत चर्चा हुई थी । नाटक का कथानक बहुत छोटा-सा है , किन्तु इसका प्रभाव अत्यंत तिलमिला देने वाला और अपने मूल तथा सही अर्थों में त्रासद है ।

सूखा , अकाल , हत्या , हिंसा , दंगे , फ़साद , ढ़ोंग , ज़हालत , गंदगी , बेईमानी , बदनीयती , गरीबी , मानसिक गुलामी , औपनिवेशिक एवं सामंत संस्कार , धर्मान्धता , जातीयवाद , क्षेत्रीयता , दल-बदल , लाठी- चार्ज , अश्रू-गैस , पथराव , गोली-बारी , हड़ताल , घिराव , बंद , तस्करी , धोखाधड़ी, झूठ एवं फ़रेब से भरे समकालीन जीवन तथा परिवेश के खिलाफ एक निम्नवर्गीय संवेदनशील व्यक्ति सत्यव्रत लड़ने के लिए तैयार होता है ।

'लडाई' व्यंग्य प्रधान नाटक है । इस नाटक में सर्वेश्वर ने जन मानस के चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छेड़ी गई लडाई को आधार बनाया है । नाटक एक प्रांसगिक और

सार्थक सवाल उठाता है कि झूठ के इस विराट और अंतहीन रेगिस्तान में सत्य का व्रत लेने या उस पर चलने का हौसला दिखाने का अर्थ अनिवार्यतः एक हारी हुई लडाई लड़ना ही क्यों है ?

संरचना की दृष्टि से यह नाटक भूमिका दृश्य के अतिरिक्त चौदह अन्य छोटे-छोटे दृश्यों में विभाजित है। प्रत्येक दृश्य के अंत में गायन द्वारा वर्तमान दृश्य के कार्य व्यापार पर बेलाग कमेंट कर के परस्पर जोड़ दिया है । घर पर पत्नी , सड़क पर डबल रोटी वाला , स्कूल में प्रिंसिपल , बस में कंडक्टर , राशन के दफ्तर में चपरासी और अधिकारी , अखबार के दफ्तर में संपादक , अस्पताल में डाक्टर , थाने में दरोगा , सड़क पर तस्कर-बदमाश-भिखारी , बस स्टैंड पर युवावर्ग , सड़क पर बुद्धिजीवी , परलोक आश्रम में स्वामी महेश्वरानंद , पार्क में पुलिस , अस्पताल में पत्नी,नर्स , डाक्टर के साथ न्याय और सत्य के लिए होने वाली सत्यव्रत की छोटी-छोटी मुठभेड़ों के माध्यम से नाटक का कार्य - व्यापार उत्तरोत्तर तीव्रता से आगे बढते जाकर सत्यव्रत की मृत्यु पर चरमोत्कर्ष प्राप्त करता है । संयोजन के स्थान पर एकांकी-सी तीव्रता किन्तु एकात्मीयता है । दो-एक दृश्यों के बाद टकराहट के स्वरुप और परिणाम का अंदाज पाठक , दर्शक पहले से लगा लेता है । दृश्यत्व का कुतुहल भी पूर्ववत नहीं रह पाता । कुछेक पात्रों या दृश्यों को निकाल देने या जोड़ देने से इसकी संरचना पर कोई फर्क नहीं पडता । यह विशेषता इस आलेख की शक्ति भी है और सीमा भी । प्रत्येक छोटे-बड़े दृश्यों के परिवर्तन की सूचना संकेत-पटों द्वारा दी जाती है या नुक्कड नाटक की तरह खेले जाने पर अभिनेताओं के शारीरिक संयोजनों अथवा क्रिया-कलापों द्वारा भी स्थान दिखाया जा सकता है । यह नाटक अपने उद्देश्य में स्पष्ट और शिल्प में लचीला है । सत्यव्रत के बहुरंगी किन्तु सीमित अनुभव संसार को व्यापक और विराट जीवन-दर्शन संदर्भ देने के लिए नाटककार ने भूमिका दृश्य तथा अंत में उद्घोषक , गायक और समवेत गायन का नियोजन किया है । एक प्रतिबद्ध नाटक के तौर पर देश के राजनीतिक दृष्टि से जागरुक रंगकर्मियों और महत् उद्देश्यों के लिए नाटक को हथियार की तरह इस्तेमाल करनेवाले वामपंथी नाट्य-दलों द्वारा इसे स्वीकारा जा सकता है ।

'लडाई' नाटक में सर्वेश्वर हमें एक ऐसा दृढ चरित्र देते हैं , जो इस घोर अलोकतांत्रिक और जनविरोधी व्यवस्था का खूनी चेहरा उधाडकर रख देता है । रचनात्मक और मन्तव्य की दृष्टि से लडाई बाद में प्रकाशित होने के बावजूद 'बकरी' नाटक का पहला सोपान है ।

'लडाई' की चरित्र सृष्टि सर्वेश्वर की महत्वपूर्ण उपलब्धि है । नाटक में सर्वेश्वर ने सत्य के लिए लड़ने वाले सत्यव्रत का चरित्र प्रस्तुत किया है । लेखक ने एक ओर ईमानदार और सच्चे सत्यव्रत की तो दूसरी ओर अन्यायी , अत्याचारी , भ्रष्टाचारी , रिश्वतखोर , प्रिंसिपल , कंडक्टर , दूकानदार , संपादक , डॉक्टर , दरोगा आदि पात्रों की सृष्टि की हैं । इन सभी पात्रों के अत्याचार का पर्दाफाश सत्यव्रत करता है । ढ़ोंगी महेश्वरानंद , व्यवस्था को विकृत करने वाली पुलिस , दरोगा , बुद्धिजीवी आदि पात्रों की निर्मिती की गया है । शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे भाषावाद को लेकर वह प्रिंसिपल से लड़ता है । दफ्तर में चलने वाली चोरी , घूस , निकम्मेपन का वह डटकर विरोध करता है । अस्पतालों में चल रहे गैर-व्यवहार , गैर-जिम्मेदारी को देख सत्यव्रत भडक जाता है । सत्यव्रत घोर अन्यायी अलोकतांत्रिक जनविरोधी व्यवस्था का चेहरा उधाडकर रख देता है । सत्यव्रत हिंदी साहित्य का अजोड चरित्र है ।

सक्सेना जी ने नारी पात्र में सत्यव्रत की पत्नी को प्रस्तुत किया है । सत्यव्रत की पत्नी सत्यव्रत का साथ नहीं देती । उनका मानना है कि " जो रास्ता जिन्दा रहने के लिए जरुरी है वही सही रास्ता है ।"[3]

'लडाई' नाटक के पहले दृश्य में सत्यव्रत और उसकी पत्नी के संवादों द्वारा सत्यव्रत की सत्य के लिए लडाई शुरु हो जाती है । पहले दृश्य से लेकर चौदहवें दृश्य तक सत्यव्रत हर वस्तु का विरोध करता नजर आता है । नाटक में उद्घोषक देश की परिस्थिति को उघाडकर घोषणा करता है , आजादी के सालों बाद भी आज जीवन के हर क्षेत्र में लडाई जारी है । नाटक में सत्यव्रत शिक्षा में मची अराजकता को स्पष्ट कर आज की शिक्षा का व्यवस्था तथा शैक्षिक वातावरण का बंखिया उधाडकर रख देता है । नाटक में धार्मिक वातावरण का चित्रण सत्यव्रत एवं महेश्वरानंद के वार्तालाप द्वारा चित्रित किया गया है। नाटक में सर्वेश्वर ने स्वाभाविक

भाषा शैली का प्रयोग किया है , उसमें वे सफल भी हो चुके हैं । भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना नाटक का प्रमुख उद्देश्य रहा है । राजनेता उसके लिए जिम्मेदार हैं ।

निष्कर्ष

'लडाई' नाटक में दिखाया गया है कि समाज का संचालन नियमों के आधार पर होता है। जब यह व्यवस्था चरमरा जाती है , तब उसकी व्यवस्था बनाये रखना बहुत कठिन हो जाता है । यह सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का सबसे सशक्त नाटक है । समाज व्यवस्था की विसंगति और विद्रुपता के विरोध में आम आदमी लड़ता है ।

नाटक का कथानक चौदह दृश्यों में विभाजित किया गया हैं । प्रत्येक दृश्य सजीव और यथार्थ प्रतीत होता है । गौण पात्रों की संख्या अधिक है । नाटक के संवाद पात्रों के अनुकूल बन पडे हैं । पात्रों का रहन-सहन , आचार-विचार और परिस्थिति के अनुसार भाषा का प्रयोग हुआ है। यह नाटक स्वातंत्र्योत्तर काल का है ।

३.अब गरीबी हटाओ

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का तीसरा नाटक 'अब गरीबी हटाओ' एक प्रसिद्ध नाटक है । इसका प्रकाशन सन् १९८१ ई. में हुआ है । यह नाटक देश में व्याप्त गरीबी की समस्या पर आधारित है । सर्वेश्वर गरीबी को अनादिकाल के परम्परित रुप से स्वीकार करते हैं । नाटककार का मानना है कि गरीबी के खिलाफ सदैव गरीब को ही लडना पड़ा है । आज भी गरीब को उभरने के लिए स्वयं कमर कसना होगा । इस नाटक की भूमिका में सर्वेश्वर ने इस व्यापक दृष्टिकोण का परिचय दिया है ।वे मानते है कि अब गरीबी हटाओ कोई नारा नहीं है , न यह शीर्षक किसी नारे से जुडा है । इस नाटक का संदर्भ व्यापक मानवीय नियति से है और इसी संदर्भ में इसे ग्रहण किया जाना चाहिए ।

'अब गरीबी हटाओ' नाटक व्यवस्था विरोधी नाटक नहीं है , जन-समर्थन का नाटक है । उस जन-मानस के समर्थन का नाटक है , जो सदियों से आज तक एक व्यापक अपमान और शोषण का शिकार बना हुआ है । यह नाटक उसकी आकांक्षाओं और घुटन को उसकी यातना

और उसके संघर्ष को उस चट्टान के नीचे दिखाने की कोशिश करता है, जो हर बार व्यवस्था की सूरक्षा के नीचे से कैसे मानवीय संकल्प का बिरवा तिरछा होकर जीवन की रोशनी की खोज के लिए निकलता रहा है । यह इसमें दिखाने का प्रयत्न किया है । बस , इतने अर्थ में वह किसी महत्त्वकांक्षा से जुड़ने का सवाल बनता है ।

सर्वेश्वर की उपर्युक्त बात से स्पष्ट हो जाता है कि वे इस नाटक को वे गाँव तक पहुँचाना चाहते हैं । साहित्य के सामाजिकीकरण का यह उद्देश्य निश्चय ही उन्हें लोकधर्मी बनाता है । इसमें विवाद की गुंजाईश हो ही नहीं सकती । नाटक का प्रारंभ नट-नटी के संवाद से होता है और नट पाठकों को यह बोध कराता है कि जीवन के नाटक में नेता विदूषक और सूत्रधार बनकर सारे देश में डंड़े का राज चला रहा है । जिसके कारण देश की प्रगति नहीं हो पा रही हैं।नाटक मंड़ली में नेता ही सूत्रधार है और सांस्कृतिक महोत्सव का उद्घाटन मुख्यमंत्री करते हैं । 'सत्य मंड़ली' नाटक कंपनी 'गरीबी हटाओ' नाटक का मंचन करने जा रही है । इसके माध्यम से वह स्पष्ट करते है कि आज लोकतंत्र में हो रहा है , वही कुछ वर्ष पूर्व राजतंत्र में भी हो रहा था । इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए नेतारुपी सूत्रधार आकर नाटक बंद करता है । नट स्पष्ट करता है कि राजतंत्र और लोकतंत्र गरीबी नहीं हटा सकते । अब तो गरीब लोगों को मिलकर यह काम पूरा करना होगा । नाटक के अंत में सक्सेना जी ने संकेत दिया है कि यह नाटक आगे तभी हो सकता है , जब आप में इतनी ताकद आ जाए , आप हम मिलकर इनकी ताकत का मुकाबला कर सकें , नाटक आगे चलवा सकें ।

यह नाटक सात दृश्यों में विभाजित है। हर दृश्य नट-नटी के संवादों से शुरु होता है । जिसके माध्यम से परिवेश दर्शकों के सामने स्पष्ट कर दिया दिया जाता है । वस्तु या कथानक तीन पक्षों से संबंधित है - गाँव की गरीबी , लोकतंत्र की मानसिकता और राजतंत्र की वृत्ति । नाटक के अंत में सक्सेना गरीबों को उत्प्रोरित करने के प्रयत्न में सफल हो जाते हैं । इस नाटक में औरत की चीख आक्रोश उत्पन्न करती है । नाटक की समाप्ति प्रभावशाली ढंग से होती है ।

नेताजी की असलियत नट उजागर कर देता है। जनता को एकजूट होकर नेता की ताकद का मुकाबला करने को कहता है।

'अब गरीबी हटाओ' नाटक में नेता , मुख्यमंत्री , कृषिमंत्री , सरपंच , राजा और मंत्री आदि का चरित्र प्रस्तुत किया है। ग्रामीण आदमी और औरत पीडित एवं शोषित पात्र हैं। प्रहरी राज व्यवस्था का विकृत रुप उभारने वाला पात्र है। सभी पात्र वर्गीय हैं मुख्यमंत्री सत्ता का प्रतीक है। सरपंच सुविधाभोगी राजनीतिज्ञ है। वह अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए झूठ बोलता है। दरोगा पात्र टुच्चे राजनेता का चमचा है।राजा विलासिता का प्रतीक है। गाँव की गरीब औरतों को लालच दिखाकर अपने हवस का शिकार बनाता है। इन पात्रों के अतिरिक्त इस नाटक में एक वर्ग ऐसा है जो व्यवस्था के प्रति आक्रोश करता है। ग्रामीण आदमी सरपंच के क्रूरतम व्यवहार का शिकार है। प्रहरी राजा की असलियत का पर्दाफाश करता है। नाटक में नारी पात्र परम्परागत रूप में चित्रित है। अब गरीबी हटाओ नाटक में सक्सेना जी ने सर्वहरा वर्ग की जीवन व्यथा , भावनाओं का निरुपन किया है।

'अब गरीबी हटाओ' नाटक में मुख्यमंत्री तथा सरपंच के संवादों द्वारा गाँव की गरीबी हटाने का संकल्प लेते हैं। नाटक तीसरे दृश्य में राजा और मंत्री के संवादों द्वारा यह बताया है कि आज कुछ वर्ष पहले राजा गरीबी हटाने का संकल्प लेते थे। परंतु गरीबी न हटाते हुए वे गरीबों को ही हटा देते थे। नाटक में नट राजनीतिक स्थिति को उजागर करता है। इस कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है- "मजाक तो आप लोगों ने खुद बना रखा है। पहले राजतंत्र में बना रखा था। अब लोकतंत्र में बना रखा है। शोषक के चेहरे वही हैं बिल्ले बदल गये हैं। 'गरीबी हटाओ' ठगी का नारा हो गया है।"[४] सक्सेना ने इस नाटक में राजनीति में चलने वाले भ्रष्टाचारी वातावरण का चित्रण किया है।

इस नाटक की भाषा सहज एवं पात्रानुकूल है। अब गरीबी हटाओ नाटक द्वारा सक्सेना बोध कराना चाहते हैं कि जीवन के नाटक में नेता , विदूषक और सूत्रधार बनकर सारे देश में डंडे का घोडा का चला रहे हैं। जिनके कारण देश की प्रगति नहीं हो पा रही है। राजतंत्र

और लोकतंत्र गरीबी नहीं हटा सकते हैं । गरीबी को गरीबों को एकत्रित होकर हटाने के लिए प्रेरित करना ही नाटक का उद्देश्य है ।

निष्कर्ष प्राचीन रुढ़ि परम्परा , अमानवीय व्यवहार देश के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं । समाज में संपत्ति का बँटवारा असमान रुप में हुआ है। अमीर और अधिक अमीर हो रहा है , तो गरीब और अधिक गरीब हो रहा है । समाज में पूँजीपति लोगों का वर्चस्व रहा है। उनका निर्णय अन्तिम होता है । गरीब उसे स्वीकार करते हैं , क्योंकि वे लाचार हैं । नेता देश में डंडे का राज चला रहे हैं । परिणाम स्वरुप देश की अधोगति हो रही है । राजनीतिक और लोकतांत्रिक गरीबी का समुल उच्चाटन नहीं कर पाये हैं । गरीबी हटाने का काम स्वयं गरीब लोगों को ही करना होगा । नाटक का कथानक सात दृश्यों में विभाजित है। प्रत्येक दृश्य की शुरुआत नट-नटी के संवाद से होती है और गायक के गीत के दृश्य से वह समाप्त हो जाता है ।नाटक का चरित्र-चित्रण सजीव हो उठा है ।कथानक की भाषा समृद्ध है।नाटक के कथ्य से मध्ययुगीन और आधुनिक दो काल का बोध हो जाता है।गरीबी मिटाना यह नाटक का महान प्रतिपाद्य रहा है ।

समन्वित निष्कर्ष

नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का संक्षेप में परिचय देने के पश्चात निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि राजनीतिक व्यवस्था का विरोध एवं भ्रष्ट नीतियों का पर्दाफाश करना तथा साथ ही राजनीति को शोषण-मूलक स्वरुप दिखाना और समाज में व्याप्त समस्याओं , विसंगतियों का चित्रण सर्वेश्वर जी ने अपने नाटकों में बखूबी के साथ किया है । इसलिए सक्सेना के नाटक राजनीतिक नाटकों की परिधि में रखे जा सकते हैं ।

विवेच्य नाटकों का कथोपकथन कथानक का विकास करने में सफल है।चरित्र चित्रण अपने आप में सक्षम हैं।नाटकों का उचित वातावरण बन पड़ा है।विवेच्य नाटकों के अपने प्रतिपाद्य को स्पष्ट करने के लिए भाषा हर संभव मदद करती रही है । शिल्पगत प्रवृत्तियों के आधार पर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के सभी नाटक सफल बन पड़े हैं ।

संदर्भ

१. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना संपूर्ण गद्य रचनाएँ-२ । पृ.१८

२. वहीं । पृ.१३

३. वहीं । पृ.३०

४. वहीं । पृ.६५

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY